श्री तीन चौबीसी मंडल-विधान पूजा

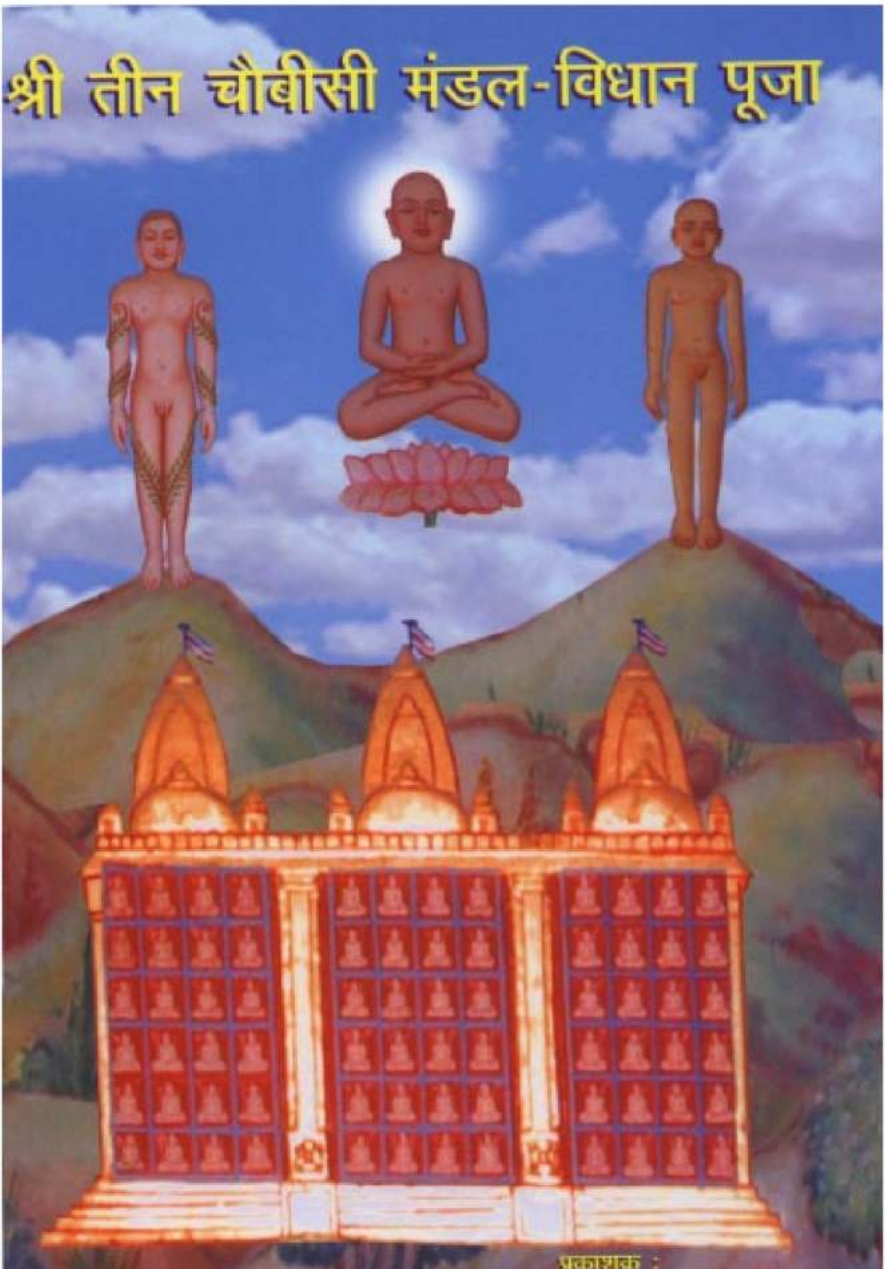

प्रकाशक :
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-364250

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–२११

श्री
तीन चौबीसी
मण्डल-विधान पूजा

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़–३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

[2]

प्रथम संस्करण : ३००० वि. सं. २०६३ ई. स. २००७

श्री तीन चौबीसी मंडल-विधान पूजा(हिन्दी)के

*** स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ***

कांतिलाल अमीचंद कामदार परिवार, चेन्नाई

ह. प्रवीणाबेन कामदार

मीनाबेन–अश्विनभाई, स्मिताबेन–भरतभाई

राजकुमार, वैभव

मूल्य : रू. 10=00

: मुद्रक :

कहान मुद्रणालय

जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउन्ड, सोनगढ-३६४२५०

✆ : (02846) 244081

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

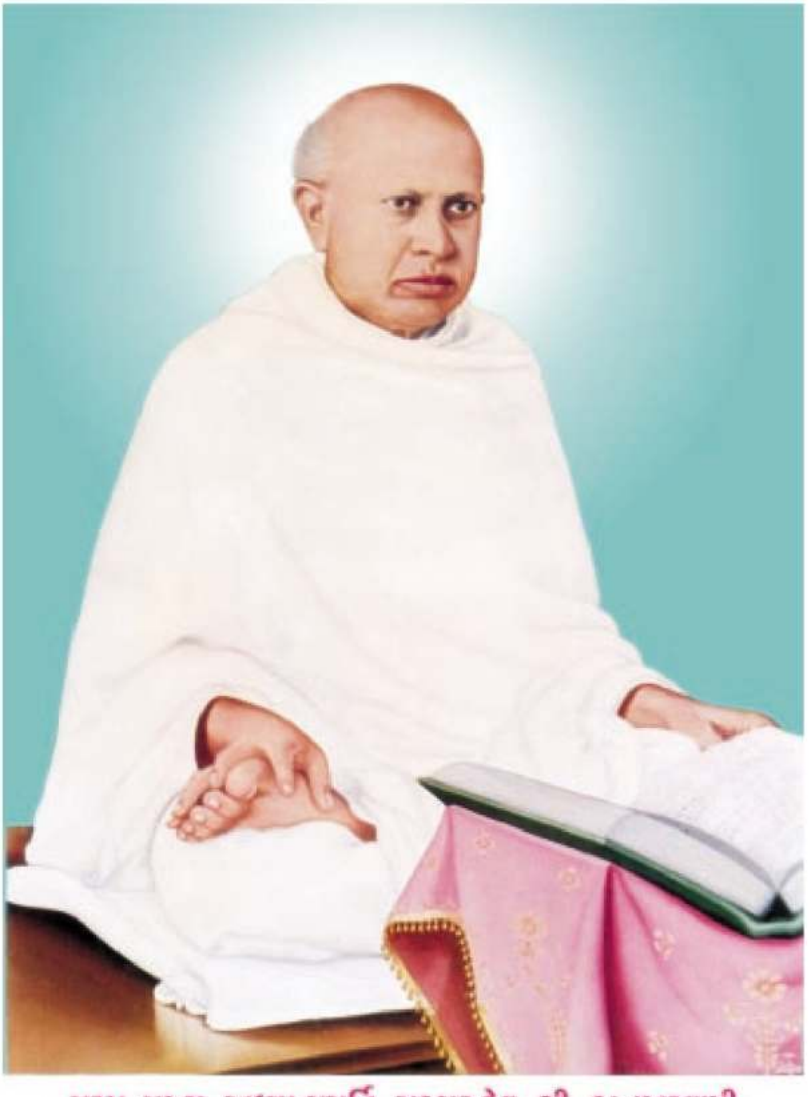

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

परमोपकारी स्वानुभूति विभूषित, अध्यात्मयुगस्रष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीकी कल्याणवर्षिणी अनुभवरसभीनी वाणीसे मुमुक्षु समाजको तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्रकाशित मोक्षमार्गके मूलरूप भवांतकारी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रका यथार्थ बोध प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा ही इस युगमें निज ज्ञायक स्वभावके आश्रयसे ही स्वानुभूतियुक्त सम्यग्दर्शन–निश्चय सम्यग्दर्शनकी प्राप्तिका मार्ग उजागर हुआ है।

तदुपरांत पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा ही इस सम्यग्दर्शनकी प्राप्तिके उत्कृष्ट निमित्त सच्चे देव-गुरु-शास्त्रका भी यथार्थ ज्ञान मुमुक्षु समाजको प्राप्त होनेसे उनके प्रति आदर-भक्ति-बहुमानके भाव जागृत हुए हैं।

साथ साथ प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीने भी पूज्य गुरुदेवश्रीकी भवनाशिनी वाणीका हार्द मुमुक्षु समाजको बताकर मुमुक्षुओंके अंतरमें जागृत सच्चे देव-शास्त्र-गुरुके प्रतिके भक्तिभावको, भक्ति-पूजाकी अनेकविध रोचक गतिविधियोंके द्वारा नवपल्लवित किया है।

जिसके फलस्वरूप सुवर्णपुरीमें देव-शास्त्र-गुरुकी भक्ति पूजनके विविध कार्यक्रमका आयोजन सदैव चलता रहता है। इस हेतुको ध्यानमें रखकर ट्रस्टकी ओरसे विविध पुस्तकोंका प्रकाशन हो रहा है।

भरतक्षेत्रके इस युगके आदि तीर्थंकर भगवानश्री ऋषभदेव भगवानश्री बाहुबली तथा अन्य मुनिवरोंकी निर्वाणभूमि श्री कैलासगिरि पर प्रथम चक्रवर्ती श्री भरतजीने जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रके भूत-वर्तमान-भावी चतुर्विंशति तीर्थंकरोंके कृत्रिम जिनालय इस युगमें प्रथम वार स्थापित करके उनमें रत्नमयी जिनबिम्बोंको स्थापित करवाया था। हमारी ओरसे यह ''श्री तीन चौबीसी मंडल-विधान पूजा'' नामका नूतन संस्करण इन तीन चौबीसीके भगवंतोकी पूजायें तथा अन्य पूजनोंके साथ प्रकाशित किया जा रहा है। यह विधान श्री टेकचन्दजी आदि अन्य पुराने कवियोंकी पूजन रचनाओंको संकलित करके तैयार किया गया है। इसलिए हम उन पुराने

कवियोंके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। हमें आशा है कि यह नूतन संस्करणसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

पूज्य बहिनश्रीका ९४वाँ
जन्मजयंती महोत्सव
भादों वदी–२
वि. सं. २०६३

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ ३६४२५०

अनुक्रमणिका

स्तुति ---------- 5
कैलाश (अष्टापद) निर्वाणक्षेत्र पूजा ---------- 7
श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्र पूजन ---------- 11
श्री बाहुबलीस्वामी पूजा ---------- 15
श्री भरत जिन पूजा ---------- 18
कैलासक्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा ---------- 21
कैलासगिरिस्थित अतीतकाल चतुर्विंशतिजिन पूजन ---------- 26
कैलासगिरि स्थित वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा ---------- 33
कैलासगिरि स्थित आगामीकाल चतुर्विंशति जिनपूजा ---------- 40
समुच्चय जयमाला ---------- 47
श्री सीमंधरादि वीस विहरमान जिनपूजा ---------- 49
श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा ---------- 53
श्री विष्णुकुमार महामुनिपूजा ---------- 57
स्वानुभूति-तीर्थ सुवर्णपुरी पूजा ---------- 60
देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधर अर्घ ---------- 64
समुच्चय अर्घ ---------- 64
कैलास तीर्थनी आरती ---------- 66
बाहुबली आरती ---------- 66
तीन चौबीस जिन आरती ---------- 67
कैलास तीर्थकी आरती ---------- 68
ॐ जय जिनवरदेवा आरती ---------- 69
शान्तिपाठ ---------- 69

देवाधिदेव जिनेन्द्रभगवानको भावभीनी वंदना

नमः सिद्धेभ्यः

स्तुति

(दोहा)

मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चितारि।
फलद रचाकर चित्त हम, पूजत कर शिर धारि॥१॥

(गीतिका)

सिर नाय सुर गुन खग नरेसुर, करै महोत्सव नित नये।
परवार जुत भर पुण्य कोष, प्रतच्छ लखि श्रीजिन जये॥
विहरंत केवल गनधरादिक, करत वर उपदेश ते।
तहँ सुनहिं अति रुचि धारि, भविजन त्याग गृह तप करहिं ते॥२॥

(अडिल्ल)

तीन चौवीसी देव सदा मंगल करे,
ये ही पुण्य फलदाय सकल संकट हरें।
ये ही त्रिभुवन नाथ जगतके सुख करा,
ये ही अधम उधार घनेका अघहरा॥३॥

ऐसे देव निहार शरणमें आइया,
पूजों पद जिन देव हरष बहु पाइया।
ता विध जग जश होय विरदकी ज्यों रहै,
और न वांछा कोई तार भव भवि कहै॥४॥

तोंसे दाता और नाहिं या भुवनमें,
नाम लेते ते तिरै तीर्थके गमनमें।
तारन तुम सम और न दीन दयालजी,
मो सम पतित उधार विरद तुम पालजी॥५॥

(छंद वेसरी)

जिनके पूजे शिवसुख होई, अधिक और महिमा कहा जोई।
पूजै सुर नर खग सुख काजे, देख विभूति देव सब लाजे॥
तुझ धने शुभ है आकारो, जिनको लखे मिटै अघ भारो।
पुण्य विना उस थल किम जइए, तातें यहां ही भावन भइये॥६॥

(दोहा)

भरतैरावत दस विषैं, कालचक्र द्वय जोग।
तामधि जंबूद्वीप यह, दच्छिन भरत मनोग॥७॥

(अडिल्ल)

हम यह पंचम काल, पाय यह क्षेत्र सो।
विद्यमान तीर्थंकर, मंगल नाहि सो॥
तातें परम उछाह, सु मन वचसों रचौं।
सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचौं॥८॥

इत्युच्चार्य जिनचरणाग्रेषु परिपुष्पाजंलि क्षिपेत्।

कैलाश (अष्टापद) निर्वाणक्षेत्र पूजा

(अडिल्ल)

वृषभनाथ जिन बाहुबली धीर वीरजी।
भरतेश्वर इस क्षेत्र, भये भगवंत जी॥
कल्याणक तित सर्व, पूज्य हरि कर भये।
अब सिद्धालय माँहि, यहाँ जिन पूजये॥

ॐ ह्रीं श्री कैलाश (अष्टापद) निर्वाणक्षेत्र ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(अडिल्ल)

कनक कलश दधि छीर, उदक निरमलहि लै।
इन्द्र जजै हम सकति नाहिं वह जल मिलै॥
भव निवारन हेत, जजौं हितकरिं अदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा॥१॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलौ।
परम सुरभि लहि भँवर, करहिं तापर किलौ॥
भव आताप निवारन कारन आनदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा॥२॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि मोती सम सालि, अखण्डित बीनकैं।
परम सुगन्धी उज्जवल, उत्सव चीनकैं॥
अक्षय पद के हेत, जजौं जिन चरनदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा॥३॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन स्वर्णमय सुरतरुके, सम ल्यायकैं।
विविध प्रकार बनाय, सुगन्ध मिलायकैं।।
मन्मथदाहि निवारि, जजौं जिन पुष्पदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा।।४।।

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बावर पुरी पिराक, तुरत घृतमें कढे।
बहुत सुगन्ध लखत, उरमें आनन्द बढ़े।
क्षुधानिवारन, कंचन-थार सम्हारदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा।।५।।

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय कंचन जड़ित, दीप अति सोहनै।
बहुत सुगन्ध, नहिं धूम, लखत मन मोहनै।
तिमिरविनाशक दीपक, लै पूजों सदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा।।६।।

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगर कपूर, आदि दस कूटकै।
सुरभिसार अलि मत्त जुरे कर टूटकै।।
करम दहनके हेत, धूप वर खेइदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा।।७।।

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खारक दाख लवंग, लायची आनिये।
श्रीफल वह बादाम, जायफल जानिये।।
ये फल दूषन रहित, मुकति-फल हेतदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा।।८।।

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुगन्ध सुरत्न, पहुप चरु धोय के।
दीप धूप फल वसु विधि, अर्घ सँजोय के॥
यह विधि अर्घ संजोय, स्वपर हित ज्ञानदा।
कैलाशगिरि थान, मुकति मारग सदा॥६॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(ढाल : परमाद की)

नागकुमार मुनिंद, व्याल महाव्यालजी।
छेद अभेद रिषिंद, तिन गुन-माल सु धार जी॥
गिरि कैलाश महान, जु शिखरतें परनी।
शिवरमनी सुखकार वंदत तिन नित करनी॥

ॐ ह्रीं श्रीबाल महाबल-नागकुमारादिमुनीनां श्रीकैलाशसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

(दोहा)

तीरथ परम सुहावनूं, शिखर कैलास विशाल।
कहत अल्प बुद्धि युक्तिसे, सुखदाई जयमाल॥१॥

(पद्धरी छंद)

जय घाती प्रकृति त्रेसठ संजोगि, दो समय पिच्यासी क्षय अयोगि।
परमौदारिक तै गये मुक्त, जिमि मूस मांहि आकाश शुक्त॥२॥

इक समय मांहि ऊरध स्वभाव, जिमि अग्नि शिखा तनु अंत चाव।
जल मछ इव सहकारीन धर्म, आगे केवल आकाश पर्म॥३॥

साकार निराकारो व भास, सहजानंद मग्न सु चिद्विलास।
गुण आठ आदि राजै अनंत, गणधरसे कहत न लहत अंत॥४॥

चेतन परदेशी अस्त व्यस्त, परमेय अगुरुलघु दर्वसस्त।
अरु अमूरतीक सु आठ येव, ये वस्तु स्वभाव सदैव तेव॥५॥

अब गुण पर्ययके भेद दोय, एक व्यंजन दूसरो अर्थ होय।
सो प्रथम अयोगा देहकार, परदेश चिदानंद को निहार॥६॥

अब अर्थ अगुरुलघु गुण सु द्वार, षट् गुणी हानि वृध निज सुसार।
सो समय समय प्रति यही भांत, जिमि जलकिलोल जलमें समात॥७॥

इह भांत सु तव गुण पर्ज्ञ दर्व, हो ध्रौव्योत्पाद-व्ययात्म सर्व।
यह लोक धरो षट दर्वसे जु, तिनकी गुण पर्यय समयके जु॥८॥

सो होत अनंतानंत जान, स्वभाव विभाव सु भेद मान।
जे ते त्रैकाल त्रिलोकके जु, इक समय मांहि जुगपत लखे जु॥९॥

हस्तामल इव दर्पण सु भाव, अक्षय सु उदासीनता सुभाव।
तव इन्द्र ज्ञान तैं मुक्ति जान, आयो पंचम कल्याण थान॥१०॥

चारों विध देव सु सपरिवार, निज वाहन जुपति उछाह धार।
तव अग्निकुमारके इन्द्र ठाढ, निज मुकुट मांहि तैं अनल काढ॥११॥

कीनों जिन तन संस्कार सार, सौधर्म इन्द्र अति हर्ष धार।
फुनि पूज भस्म मस्तक चढ़ाय, सब देव हु निज निज शीश नाय॥१२॥

करि चिह्न थान निज गए थान, फुनि पूजे मुनि जग खग सु आन।
तुम भए सु आदि अनंत देव, अनुपम अबाध अज अमर सेव॥१३॥

मैं पर्यो चतुर्गति वन सु मांहि, दुख सहे सो तुम से छिपे नांहि।
तुम करुणानिधि निज बान धार, संसार खारतैं तार तार॥१४॥

(धत्तानंद छन्द)

जय जय जगसारं, विगत विकारं, करुणागारं शिवकारं।
मम करु निरवारं, हे प्रणधारं, चिद्व्यापारं दातारं॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरिसे निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीवृषभादिजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

❐

श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्र पूजन

(अडिल्ल)

आदि सनाह सजि सील मदन दुसतर हत्यो,
अनुप्रेक्षा सर संधि मोहभट जय कत्यो;
प्रवज्या सिवका साजि वरांगन शिव वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(नाराच छंद)

इन्दु कुंद छीरतैं अपार स्वेत वारही,
मिश्र गंध भृंग धारिकैं निकारि धारही।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यौं,
अष्ट द्रव्य ल्याय आदिनाथ पूजि मोदस्यौं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चंदनादि ले भवादि दाहकूं हरै,
सरद हूवै सनेह उस्न बूंद एक जो परैं। अनेक० २

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

राय भोग्यके मनोग्य तंदुलौघ सारही,
सरल चित्तहार स्वेत पुंज भव्य धारही। अनेक० ३

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्याईये,
जिनेन्द्र अग्र धारिकैं मनोजकूं नसाईये। अनेक० ४

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदकादि घेवरादि घृत खंडतैं करैं,
स्वर्नथाल धारतैं, छुध्यादि रोगकूं हरैं। अनेक० ५

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न दीप तेज भान हेम थालमें भरैं,
जिनेन्द्र अग्र धारि भव्य मोह ध्वांतकूं हरै।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यौं,
अष्ट द्रव्य ल्याय आदिनाथ पूजि मोदस्यौं॥६॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दसांग धूप चंदनादि स्वर्न पात्रमें भरैं,
हुतास संग धारि कर्म ओघ भव्यके जरै। अनेक० ७

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट सुष्ट श्रीफलादि घ्राण चक्खिकूं हरैं,
मनोग्य चित्तहार पूज जोग्य थालमें भरैं। अनेक० ८

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय)

सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतैं मधु झंकारै,
तंदुल शशितें स्वेत कुसुम परिमल विस्तारैं;
छुधा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै,
धूप दहै वसु कर्म मोखमग फल परकासै।
इम अर्घ करैं सुभ द्रव्य ले, रामचंद कनक थाल भरि,
श्री आदिनाथके चरण जुग, वसु विध अरचैं भाव धरि॥९॥

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

सरवारथ सिधितें अहमिंद, मरुदेवी उर नाभि नरिंद।
नगर अयोध्या कृष्ण सुदोज, मास अषाढ़ वृषभ जिन कोज॥

ॐ ह्री अषाढकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(अडिल्ल)

चैत्र असित नवमी श्री वृषभ जिनंदजी,
आयु चौरासी लाख पूर्व सुखकंदजी।
धनुष पांचसै तुंग कनक तन सोहनो,
चिह्न वृषभ जिनपद नमों मन मोहनो।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चैत्र वदी नवमी आदीश्वर तप धरो,
गजपुरमें श्रेयांस भुवन पारन करो।
दीक्षा वट तरु तले रहे छदमस्थ जी,
वरष सहस एक चार सहस नृप संघ जी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(गीता छन्द)

फागुण इकादशि श्याम प्रात सु आदि प्रभु केवल ठई,
गणि वृषभसेन सु आदि चौरासी चतुर्विध संघ लई।
चौतीस सहस सुवार लाख प्रमाण थिति केवल कहों,
इक लाख पूर्वम घाट वर्ष हजार इक नमि अघ दहों॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकाद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(प्रमिताक्षरा छन्द)

वदि माघ चारदश मुक्ति लियं, पद्मासनस्थ दिन चौद कियं,
निरजोग आदि जु अष्टापद तै, तै श्री मुनि अय्युतं संघ मिले॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला

(दोहा)

वैरागी आदिनाथ जिन; विषय अरनि दुखकार;
प्रगट भस्म तप अग्नितैं करैं नमूं पद सार॥१॥

(पद्धरी छन्द)

जय तीन जगतपति आदिदेव, भव उदधि तार तुम शरन एव,
जय धर्मतीर्थ करता जिनेश, जगबंधु विना कारन महेश॥२॥

जय तीर्थराज किरपानिधान, जय मुक्तरमा-भरता सुजान,
जय स्वयंबुद्ध शंभू महान, जय ज्ञानचक्षु करि विश्व जान॥३॥

जय स्वपर हितू मदमोह सूर, दीक्षा कृपाण गहि तुरत चूर,
जय तेरह चारित अमल धार, हत राग द्वेष वय अति कुमार॥४॥

तुम ज्ञान पोत लहि भवि अनेक, भवसिंधु तरे संशय न एक,
तुम वचनामृत तीरथ महान, ह्वै पावन जे करि हैं सनान॥५॥

दुःकर्म पंक छिन ना रहाय, तुम वैन मेघ करिकें जिनाय,
तुम ज्ञान भान करिकैं ममेश, ह्वै तिमिर मोहको छय असेस॥६॥

शिवपथ भव्य निर्विघ्न जाय, तेरी सहाय निर्वान पाय,
बहु जोगीश्वर तुम शरन थाय, निर्वान गये जासी अघाय॥७॥

जय दर्शन ज्ञान चरित्त इश, धर्मोपदेश दाता महीश,
जय भव्यनिकर तारन जिहाज, भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज॥८॥

त्वं नाम मंत्र जो चित धरेय, सर्वारथसिद्धि शिवसौख्य लये,
मैं विनऊँ त्रिविधा जोरि हाथ, मुझ देहु अछैपद आदिनाथ॥९॥

(धत्ता)

आदि जिनेश्वर नमत सुरेश्वर, वसुविधि करि जुग पद चरचै,
दुह जर मरणावलि नसै भवावलि, रामचंद शिवतिय परचै॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलीस्वामी पूजा

(अडिल्ल)

घाति हने लहि ज्ञान बोधि भवगिरि ठ्ये,
हनि अघाति बाहुबलि सिवालै थिर भये;
आह्वानादि विधि ठानि वार त्रय उच्चरूं,
संवौषट् ठः ठः वषट् त्रयविध करूं।

ॐ ह्री श्रीबाहुबलीजिन ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्री श्रीबाहुबलीजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(त्रिभंगी छन्द)

उत्तम जल प्रासुक, अमल सुवासित, गंगादिक हिम तृटहारी,
तुम पूजन आयो, अति सुख पायो, हरो जनम मृति दुखकारी;
बाहुबलीस्वामी, अन्तरजामी, अरज सुनो अति दुख पाउं,
भव वास बसेरा, हर प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाउं।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कुंकुम ल्यावै, चंदन मिलावै, अगर मेलि घनसार घसै,
श्री जिनवर आगे, पूज रचावे, मोहताप ततकाल नसै। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासम तंदुल अमल अखंडित चंद किरन सम भरि थारी,
करि पुंज मनोहर जिन पद आगै, लहौं अखै पद सुखकारी। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार जु सुन्दर कुसुम सु ल्यावैं, गन्ध लुब्ध मधुकर आवैं,
जिनवर पद आगैं, पूज रचावैं समरबान नसिकें जावैं। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध चरु लै मिष्ट मनोहर, कनकथाल भरि तुम आगैं,
पूजन कूं ल्यायौ, अति सुख पायौ, रोग क्षुधादि सबै भागैं।
बाहुबलीस्वामी, अन्तरजामी, अरज सुनो अति दुख पाउं,
भव वास बसेरा, हर प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाउं।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ मोह सतायो अति दुख पायो ज्ञान हर्यो करिकैं जोरा,
मणि दीप उजारा तुम ढिंग धारा हरो तिमिर प्रभुजी मोरा। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

किसनागर ल्यावैं अगर मिलावैं, भरि धूपायन प्रभु आगै,
खेये शुभपरिमल तैं मधु आवैं, करम जरैं निज सुख जागैं। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम ल्यावे, प्रासुक मोहन गंध सुगंधे रसवारे,
भरि थाल चढावें, सो फल पावैं मुक्ति महा तरुके प्यारे। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करि अर्घ महा, जल, गंध सु लेकरि, तंदुल पुष्प चरु मेवा,
मणि दीप सुधूपं, फल जु अनूपं 'रामचंद' फल सिवसेवा। बाहुबली०

ॐ ह्रीं श्रीबीहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चाल–अहो जगतगुरुदेव की)

बाहुबली जिन देव, सुनिज्यो अरज हमारी,
इह संसार मझारि, और न सरनि निहारी।

सुनिये हरि हर देव, काल सबै ही खाये,
उनको सरनो कौन, आपुनही थिर थाये।

तुम निरभै तजि मोह, ध्यान शुक्ल प्रभु ध्यायो,
उपज्यो केवलज्ञान, लोकालोक लखायो।

धरो जनम नहिं फेरि, मरन नहिं निद्रा नासी,
रोग नाहि नहि शोक, मोहकी तोरी फांसी।

विस्मयको नहिं लेश, धीर भयप्रकृति विदारी,
जरा नांहि नहि खेद, पसेव न चिंता टारी।

मद नाहीं नहिं वैर, विषय नहिं रति नहिं कातैं,
प्यास हनी हनि भूख, अष्टदश दोष न यातैं।

नमूं दिगंबर रूप, नमूं लखि निश्चल आसन,
मुद्रा शांत निहारि, नमूं नमिहूं तुम शासन।

नमूं कृपानिधि तोहि, नमूं जगकरता थे ही,
असरन कूं तुम सरन, हरो भवके दुःख ये ही।

जामन मरन वियोग, सोग इत्यादि घनेरे,
फेरि न आवें निकट, करो प्रभु ऐसी मेरे।

तुम लखि दीनदयाल सरनि हम यातें आये,
ऐसे देव निहारि भागितैं तुम प्रभु पाये।

''रामचंद'' कर जोरि, अरज करि है जिन ऐसी,
विपति यहै जगमांहि, सबै तुम जानत तैसी।

यातै कहनी नांहि, हरो जिन साहिब मेरे,
विन कारन जगबंधु, तुही अनमतलब केरे।

सरन गहेकी लाज, राखि जगपति जिनस्वामी,
करुणा करि संसार बाहुबली जिन अंतरजामी।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❋

श्री भरत जिन पूजा

(दोहा)

तीरथ परम पवित्र अति, कैलास शैल शुभ थान।
जहँ तैं भरत चक्री शिव गये, पूजों थिर मन आन।।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद प्राप्त भरत जिन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद प्राप्त भरत जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्री श्री कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द गीतिका)

नीर निरमल क्षीर दधि को, महा सुख दायक सही।
मैं लेय झारी कनक माहीं, आपने कर की मही।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजा करों।
तिस फलैं जामन मरण के दुख, नाश हों सहजैं करों।।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

घसि नीर गंधसु धार चन्दन, सकल को सुखदाय ही।
धरि कनक पातर भक्ति उर धरि, तास पद पूजों सही।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं भव आताप नाशै, वाणि जिन ऐसे कही।।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व०

सुभग उज्वल खंड बिन ही, अक्षत निरमल लाइयो।
ले आपने कर हरष धरिके, देव जिन गुण गाइयो।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सहीं।
ता फलै थानक अखय पावै, भव भ्रमण परिणति रही।।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व०

फूल सुर द्रुम तने सुन्दर, गन्धकी उपमा घनी।
ले आप कर अति भक्ति उरधर, पापकी परिणति हनी।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलै दुखदा मदन नाशै, पाय है सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व०

नैवेद्य षटरस सहित सुखदा, तुरत को कीनों लियो।
धरि सुभग पातर आप करले, भक्ति जुत शुभचित कियो।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं जठरानल विनाशै, और फल की को कही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

रतन दीपक ज्योति करता, तम हरा सुन्दर गिनों।
धरि कनक पातर आरती कर, हरष बहु हिरदै ठनो।
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं मिथ्या रोग नाशै, सुरत में ऐसे कही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

धूप दश विध गंधदायक, घ्राणको सुखदायजी।
ले हरष जुत तें आपने कर, धरों बह्नि मांहिजी॥
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं आठों कर्मक्षय हो, जनम की उतपति रही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

लोंग श्रीफल दाख पिस्ता, जान सुभग बिदामजी।
फिर आनि पुंगी फला खारक, आदि सुखके धामजी॥
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं शिवफल होय भविजन, और को महिमा कही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल चन्दनाक्षत पुष्प चरुले, दीप धूप फला गिनो।
ये अष्टद्रव्य सुलेय सुन्दर अरघ अपने कर ठनो॥
भरत चक्री मुक्ति पायो, तास पद पूजों सही।
ता फलैं दुःख मिटे जगत के, मिले शिवसुख की मही॥

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिनेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(वेसरी छन्द)

भरतक्षेत्रके कैलासगिरि तहं ते भरत चक्री शिवपाई।
धन्य तिन्हें पूजें उस ठाहीं, हममें जानेका बल नाहीं॥१॥

तातें इस ही थलमें जानो, हाथ जोड़ करि हैं थुति मानो।
इस थल तें यह अरजी स्वामी, भव भव शरण देहु मो नामी॥२॥

और चाह मेरे कछु नाहीं, तुम गुण मान चाह उर माहीं।
तुम थुति ही सुर शिव सुख देवे, तुम महिमा तें दुख नहीं बेवे॥३॥

तुम प्रभु दीन-तार सुनि आयो, मैं अतिदीन शरण तुम जायो।
पतित उधारन विरद तिहारो, हूँ अति पतित जिनद मो तारो॥४॥

तुम प्रभु अशरण शरण बताये, बहुते अशरण पार लगाये।
इम सुनि जिन तुम शरणै आयो, मैं अशरण जिन तुम पद पायो॥५॥

नाथ नाहिं ताके भव माहीं, तुम अनाथ के नाथ कहाहीं।
जय जय जय करुणानिधि देवा, बहुत कठिन पाई तुम सेवा॥६॥

जय जय भव सागरको नावा, जय जय भव वन साथ कहावा।
जय जय शिव दायक जह पीवा, जय जय सुर हरिनाथ सदीवा॥७॥

जय जय धर्मी धर्मा सागर, गुण अनन्त रत्नोंके आकर।
जय जय शिवदायक जग पीवा, जय जय तुम थुति हरष सदीवा॥८॥

इत्यादिक थुति कर खग देवा, पुण्य उपाय जाय थल लेवा।
कै जिन खेतर के नर सोई, पूजें तिन्हें धन्य फल होई॥९॥

मैं तो शक्ति हीन हूँ स्वामी, किस विधि जाऊँ अन्तरयामी।
तातें इस ही थल तें देवा, मन वच काय करों तुम सेवा।।१०।।

ॐ ह्रीं कैलास सिद्धक्षेत्रसे मुक्ति प्राप्त भरत जिन पूजनार्थे महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैलासक्षेत्र संबंधी जिन चैत्यालय पूजा

(गीतिका छन्द)

भरत खेतर कैलासगिरि मांहि शुभ थल राजिये।
तिस मांहि जिनके थान सुन्दर, विनय सहित विराजिये।।
तिन बीच प्रतिमा शुद्ध मूरति, सुरतमें जैसी कही।
पूजा तिनकी करनको शुभ भावतैं विनती ठही।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि जिनालयस्थ-जिनबिंबसमूह अत्रावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि जिनालयस्थ-जिनबिंबसमूह अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिंबसमूह अत्र मम सन्निहितो सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

क्षीरोदधिको निरमल पानी, कनक पियाले आनो।
ले अपने कर हरष धार करि, सफल आज दिन मानो।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों तिन फल जनम जरा दुख, दोष न उपजै कोई।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो जलं निर्व०

चंदन घसि शुचि निरमल जल से, मलय सुगंधित धारी।
ले शुभकारी जिनमंदिरको, मन वच काय संवारी।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों तिन फल भव-तप नाशै, अवर न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो चन्दनं निर्व०

अक्षत उज्वल जायकलीसे, श्वेत वरण अधिकाई।
धार हरष उर ले अपने कर, अनुमोदन जुत भाई।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों तिन फल नाश करन को, अक्षय पदको जोई॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो अक्षतं निर्व०

फूल महा गंध धार सार ले, वरण भला सुखकारी।
तापै अलि वशि होय बासके, गुंजे तें कर धारी।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों तिन फल नाश कामको, और न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो पुष्पं निर्व०

षट् रसमय नैवेद्य खेद बिन, तुरत बना कर लायो।
घाल थाल कंचन भरपूरण, उमगे ही चित आयो।
कैलासगिरि जिनगेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों तिन फल होय क्षुधाक्षय, अवर न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

रतन दीप अति ज्योति प्रकाशी, कंचन थाल भराई।
अपने मुखतें मधुर शब्द करि, जिनवरके गुण गाई।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों ता फल नाशन तमको, और न वांछा कोई॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो दीपं निर्व०

दशविधि गंध मिलाय धूप कर, अपने करमें धारों।
मन वच काय शुद्ध करि वसु अरि, अगनि विषै ले जारों।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों ता फल होय करम क्षय, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो धूपं निर्व०

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक शुद्ध मंगाऊं।
पिस्ता चारु मनोहर लेकर, इन आदिक बहु लाऊं।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों ता फल शिवफल उपजे, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो फलं निर्व०

जल चंदन अक्षत पहुप चरु, दीप धूप फल भाई।
मेलि वसु द्रव अरघ करूं शुभ, अति आनंद उर लाई।
कैलासगिरि जिन गेह जिते हैं, बिंब शुद्ध तहं होई।
पूजों ता फल हो अनर्घ्य पद, और न वांछा कोई।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्व०

(अडिल्ल)

भरतक्षेत्र नग-खान देश रतना भरयो, तामें सरिता घनी बहुत झरना झरयो।
धर्म ध्यानमें बैठ जीव शिवपुर लहै, ते थानक हूँ जजों देव जिनवर रहैं।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि कैलासगिरि-जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

(पद्धरी छन्द)

जब प्रगटयो जिन केवल सु भान, आसन कंप्यो सुर असुर जान।
धनपति आज्ञा दीनी सुरेश, समवसृत आय रच्यो जिनेश।।

इन्द्र हु परिवार समेत आय, जिन पूज भक्ति कीनी बनाय।
नर खग पशु असुर नमे जिनाय, बैठे निज निज कोठे सभाय।।

तब समवशरण लखि इन्द्र हर्ष, तसु किंचित् वर्णन लिखौ पूर्व।
प्राकार नीलमणि भूमसार, चहुं दिश शिवाण वीस वीस हजार।।

तापै सु कोट धनु किधौं आई, धूलिसाला पण रत्न बनाई।
चहुं दिशमैं मानस्तंभ चार, त्रै कोटि रु कटनी धुजा सार।।

तामैं जिनबिंब बिराजमान, सिंहासन छत्र चमर सुजान।
तोरण द्वारन मंगल सुदर्व, कंचन रतननसों खिचे सर्व।।

ताके चहुं दिस वापिका चार, मानिनको मान गलत निहार।
ताके आगे शालिका सार, पुष्पनि की बाडी दोउ पार।।

फिर दुतिय कोट कंचन सुवर्ण, गोपुर द्वारन तोरण सुपर्ण।
अष्टोतर सत मंगल सु दर्व, द्वारन द्वारन विधि परी सर्व।।

तामें नटशाला चहूं ओर, तहां नटै अपछरा विविध जोर।
तहँ वन चारों दिसि सोभकार, चंपक अशोक आम्रादि चार।।

इक इक दिश वृक्ष सु चैत्य एक, जिन बिंबांकित पूजत अनेक।
फुनि तृतिय कोट ताए सु हेम, ध्वजपंकति तूप सु रत्न जेम।।

चौथो जु फटिकमणि कोस कोट, ताके मध द्वादश सभा गोट।
चव कोट मध्य वेदिका पांच, अंतरमैं नाना विविध रांच।।

कहुं मंदिर पंकति शिला जोग, सामानिक गंधकूटी संजोग।
ताके मध कटनी तीन राज, तापै औ गंधकुटी जु छाज।।

तामैं सिंहासन कमल सार, जिन अंतरीक्ष शोभे अपार।
इत्यादिक वर्णनको समर्थ, अब कहों छियालिस गुण जु अर्थ।।

जय जन्मत ही दश भये एह, बल नंत अतुल सुंदर सु देह।
जय रुधिर श्वेत अरु वचन मिष्ट, शुभ लक्षण गंध शरीर सिष्ट।।

जय आदि संहनन संसथान, मलरहित पसेव हु रहित मान।
फुन केवल उपजे दश जु एम, विद्येश्वर सब चतुरानन नेम।।

आकाशगमन अदया-अभाव, दुरभिक्ष जु शत जोजन न पाव।
अव इन पांचनसो रहित देव, उपसर्ग केश नख वृद्ध सेव।।

टमकार नेत्र कवला–अहार, छाया अब सुरकृत दस सु चार।
सब जीव मैत्री आनंद लहाहीं, अर्द्धमागधि भाषा सब फलाहिं।।

दर्प्पन नभ भू निरकंट सृष्टि, सौगंध पवन गंधोद वृष्टि।
नभ निर्मल अरु दश दिशहु जान, पद कमल रचत जय जय सुगान।।

वसु मंगल दर्व रु धर्मचक्र, अगवानी सुर ले चलत शक्र।
अव प्रातिहार्य वसु भेव मान, सिंहासन छत्र चमर सु जान।।

भामंडल दुंदुभि पहुप वृष्टि, दिव्य ध्वनि वृक्ष असोक सृष्टि।
दरशन सुख वीरज ज्ञान नंत, तुमही मैं औरन ना लहंत।।

अरु दोष जु अष्टादश कहेय, औरन में है तुम में न तेह।
सो जन्म मरण निद्रा रु रोग, भय मोह जरा मद खेद सोग।।

विस्मय चिन्ता परस्वेद नेह, मल वैर विषैरति क्षुध त्रिषेह।
सर्वज्ञ वीतरागता जेह, सो तुम मैं और न बनै केह।।

तुमरो शासन अविरुद्ध देव, बाकी संसय एकान्त भेव।
तुम कह्यो अनेकान्त सु अनेक, यह स्याद्वाद हत पक्ष एक।।

सो नय प्रमाण जुत सधै अर्थ, सापेक्ष सत्य निरपेक्ष व्यर्थ।
युक्तागम परमागम दिनेश, ताकी निशि चोर इवाकु भेष।।

भवितारण तरण तुही समर्थ, इह जान गही तुम शरण अर्थ।
मो पतित दोष पर चित न देहु, अपनी विरदावली मन धरेहु।।

हे कृपासिन्धु यह अर्ज धार, भै रोग तिमिर मिथ्या निवार।
मैं नमों पाय जुग लाय शीस, अव वेग उवारो है जगीश।।

(छन्द)

जय जय भवितारक, दुर्गति वारक, शिवसुख कारक विश्वपते।
हे मम उद्धारक भवदधि पारक, अखिल सुधारक द्रिष्ट इते।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रकैलासगिरिसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कैलासगिरिस्थित अतीतकाल चतुर्विंशतिजिन पूजन

(अडिल्ल)

होय गये जिन चार बीस आगे सही, तिन इन मुख वच सुने धन्य ते नर कही।
हम तो भावन भाय पूजने कारनै, करि है इह आह्वान अरज इम इम सुनै।।

ॐ ह्रीं जम्बू-भरतक्षेत्र कैलासगिरि स्थित अतीतकाल चतुर्विंशति जिन अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वाननम्)।

ॐ ह्रीं जम्बू-भरतक्षेत्र कैलासगिरि स्थित अतीतकाल चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बू-भरतक्षेत्र कैलासगिरि स्थित अतीतकाल चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल)

गंगा निरमल जसो जल लाईयो, कनक झारिका धार भक्ति मन लाइयो।
होय गये जिन बीसचार जिनपद जजों, जनम जरा मृतु रोग नास फलतें तजों।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं०

चन्दन घसि शुभ नीर भली बहु गंध मई, रतन रकेबी धारि लाइयो थुति चई।
होय गये जिन बीस चारि जिनपद जजों, ताफल भव आताप आपने सब तजों।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनं०

अक्षत उज्वल खंड बिन मोती समां, ले अपने कर भक्ति भाव आनन्द रमा।
होय गये जिन बीस चारि तिन पद सही, पूजों ता फल होय अक्षयपदकी मही।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतं०

फूल देवद्रुम तने भ्रमर शोभा लये, गन्ध घनीके धार रंग महिमा ठये।
होय गये जिन बीस चारि तीन पद सही, पूजें मदन नशाय भाव समता ठई।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं०

पूरण षट् रस मेल चारु चरु लाइयो, कनक पात्रमें घाल भले गुण गाईयो।
होय गये जिन बीस चार तीन पद सही, ता फल अपनी व्याधि भूख सारी दही।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यं०

रतन दीप बहु लाय सकल तमके हरा, कनक थालमें भक्ति भाव कर सब भरा।
होय गये जिन बीस चार तिन पद जजों, ता फल अपने मोह तिमिर सब ही तजों।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं०

धूप घनी गन्ध धार सार दश विधि सही, खेऊं वह्नि मांहि हरष उरमें थही।
होय गये जिन बीस चार जिन पद जजों, ता फल कर्म जलाय छार सम कर तजों।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपं०

श्रीफल लोंग विदाम सुपारी जानिये, पिस्ता आदिक भले भले फल आनिये।
होय गये जिन बीस चार जिन पद जजों, ता फल शिव फल होय सकल अघको तजों।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलं०

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु लाइये, दीप धूप फल अर्घ बनाकर ध्याइये।
होय गये जिन बीस चार जिन पद जजों, ता फल भव दुख सबै आपने अघ तजों।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यं०

जम्बू भरत मझार हो गये जिन सही, बीस चार जग पूज जजैं हो शिव मही।
तातै वसु द्रव्य लाय अर्घ कीना भली, पूजों मैं जिन राज अतीते थिति रली॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अतीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घ्यं०

प्रत्येक अर्घाणि

(चौपाई)

जिन निर्वाणनाथ सुखदाय, होय गये इस खेतर मांहि।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि श्रीनिर्वाण अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१॥

सागर नाम देव जो सही, होय गये इस खेतर मही।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि सागर अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२॥

महा साधु नाम जिन देव, होय गये इस क्षेतर एव।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि महासाधुनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥३॥

विमल प्रभु नामा जिन सोय, होय गये भरत हि में जोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि विमलप्रभनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥४॥

शुद्ध भाव नामा जिन सही, होय गये इस खेतर मही।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि शुद्धप्रभनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥५॥

श्रीधर नाम देव जिन सोय, होय गये इस क्षेतर जोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि श्रीधरनाथ अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥६॥

दत्तनाम जिनदेव महान, होय गये भारतके थान।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि दत्तनाथ अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥७॥

अमल प्रभ नामा जिन सोय, होय गये भारतमें जोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अमलप्रभ नाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥८॥

श्री उद्धर नाम जिन सोय, होय गये भरतहिमें जोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि उद्धरनामा अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥९॥

अगनिनाथ नामा जिनदेव, होय गये भारतमें जेव।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि अग्निनाथ नाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१०॥

संजमनाम महा जिन सोय, होय गये भारतमें जोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि संयमनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥११॥

पुष्पांजलि नामा जिनदेव, होय गये भारतमें एव।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि पुष्पांजलिनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१२॥

शिवगण नाम नाम जिनदेव, होय गये भारतमें एव।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि शिवगणनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१३॥

उत्साह नामा परमेश होय गये भारतके देश।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि उत्साहनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१४॥

ज्ञान नेत्र तीर्थंकर सही, होय गये भारतके मही।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि ज्ञाननेत्र अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१५॥

परमेश्वर नामा भगवान, होय गये भारतके थान।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि परमेश्वरनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१६॥

विमलेश्वर नामा भगवान, होय गये भारतके थान।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि विमलेश्वर अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१७॥

नाम जथारथ देव जिनेश, होय गये भारतके देश।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि यथार्थदेव अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१८॥

नाम यशोधर जिनवर देव, होय गये भारतमें तेव।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि यशोधरनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥१९॥

कृष्णदेव सब जग हितकार, होय गये भारतमें सार।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि कृष्णमति अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२०॥

नाम ज्ञान मति देव महान, होय गये भारतके थान।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि ज्ञानमति अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२१॥

नाम विशुद्ध मती जिन जोय, होय गये भारतमें सोय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि विशुद्धमतिनाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२२॥

श्री भद्दर नामा जिन सही, होय गये भारतके मही।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि श्रीभद्र अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२३॥

शांति युक्त नामा जिन देव, होय गये भारतमें तेय।
तिनके पद ये अर्घ चढाय, पूजों मैं शुभ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धि शांतियुक्त नाम अतीत जिनाय अर्घ्यम् ॥२४॥

(अडिल्ल)

देव जिनेश्वर भये अतीत जु कालमें, बीस चार जग पाल नवों तिन भालमैं।
यही भक्तिके तार शरण मोकों रहो, अर्घ जजों तिन पांय पाप मेरे दहो॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र कैलासगिरि सम्बन्धित अतीत जिनेभ्यो अर्घ्यम् ॥२५॥

जयमाला

(दोहा)

जिन चौबीस अतीत जे, होय गये भगवान।
तिन पद पूजे सुख मिले, तिन ही सों वर थान॥१॥

(वेसरी छन्द)

जय निर्वाण नाथ जिनदेवा, तुम सेवा निर्णय सुख मेवा।
सागर जिन सेवो मन भाई, तो सागर सम सुख उपजाई॥२॥

महासाधु जिनके पद सेवो, तो भवि महा साधु पद लेवो।
विमल प्रभ जिन जे गुण गामी, सो जिय विमल होय शिव जासी॥३॥

शुद्ध भाव जिनके गुण गावे, सो भवि ज्ञान सुधा रस पावे।
श्रीधर जिन को जो जिय सेवै, सो शिव नारि तनो सुख पेवै॥४॥

दत्तनाथ जिनके पद ध्यावो, दत्त सु नाथ तनो पद पावो।
अमल प्रभ सेवा जो ठाने, सो जिय अमल ज्ञान फल आने॥५॥

उद्धर जिनकी जो थुति ठानै, जो जग ते उद्धरनो आने।
अग्निनाथके जो गुण गावै, सो जिय अग्नि ध्यान उपजावे॥६॥

संयमजिनके जो पद सेवै, सो जिय संयम शुध पद लेवै।
पुष्पांजलि जिनको जो ध्यावै, पुष्प थकी जिन पूजा पावै॥७॥

शिवगण जिनके जो गुण गासी, सो जिय शिवगुणको फल पासी।
उत्साह प्रभुके गुण गावो, तो उत्कृष्ट पूज पद पावो॥८॥

ज्ञान नेत्र जिन गुण जो गासी, सो जिय केवलज्ञान उपासी।
परमेश्वर जिनके पद ध्याऊँ, ता फल परमेश्वर पद पाऊं॥९॥

विमलेश्वर जिन ध्यान करावै, सो भवि विमल आप हो जावे।
नाम यथारथ जिनगुण सेवो, थान जथारथको सुख लेवो॥१०॥

नाम जसोधर जिन पद सेवै, सो भवि जग जश ले सुख बेवै।
कृष्णदेव प्रभुको पद ध्यावो, तो सबही कारज सिध लावो॥११॥

नाम ज्ञानमति जिन मन आने, सो भवि ज्ञान पाय जस ठाने।
जो विशुद्ध मति जिन ढिग आवै, सो विशुद्ध मतिको फल पावे॥१२॥

जिन श्री भद्र शरण ते आसी, सो जिय मोक्ष सिरी फल पासी।
शान्ति युक्त जिन सेवे सोही, सो जिय मोक्ष युक्त पद होही॥१३॥

(दोहा)

ऐसे जिन चौबीस जे, भये महा सुखकार।
तिन पद अर्घ जजों सही, मोको हो सुखकार॥

ॐ ह्रीं अतीतकाल चतुर्विंशति जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कैलासगिरि स्थित वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा

(अडिल्ल)

ऋषभ आदि महावीर पूजते जानिये,
बीस चार जिनराज भक्ति इन आनिये।
प्रतिमा तिनकी थापि भली विधि पूजिये,
अष्ट दरब दे पाय फलै अर्घ धूजिये॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निधिकरणम्।

(गीतिका छन्द)

नीर निरमल गंध धारा, बीच ते लायो सही।
धरि कनक झारी आप करले, पूजको उद्यत ठई।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद है।
यह जजों जल तिन चरण आगे मिटै भव तप फंद है॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं०।

बावनो चंदन सु घसिके, निर्मल जल मिश्रित कियो।
धर रतन झारी मांहि करले, भक्ति जिनकी चित दियो।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद है।
यह जजों चन्दन चरन आगे, मिटै भव तप फंद है॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो चन्दनं०।

अक्षत सु उज्वल खंड बिन है, रूप मुक्ता फल जिसे।
धर सुभग भाजन भाव जुत हैं, पूज जिनको मनस से।

ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों अक्षत चरण आगे, अखय पद जिन वंद्य हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतं० ।

फूल गंध समेत सब रंग, नयन घ्राण जु सुख मई।
ले आपने कर हरष धरिके, पूजने आयो सही।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों पुष्प जु चरण आगे, काम गज हर फंद हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं० ।

नैवेद षट् रस पूर उज्वल, भाव भावत लाइयो।
करधार सुन्दर थालमें ले, मुखै जिनगुण गाइयो।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों चरु शुभ चरण आगे, मिटै क्षुधको फंद हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यं० ।

दीपक उद्योत सु रतनकारी, नाश तमको सो करे।
जो थाल भरले हरष धरके, आपने करमें धरे।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों दीपक चरण आगे, कटे अज्ञतम खंड हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम्० ।

धूप दश विध लाय सुन्दर, अगर आदि मिलायजी।
मैं भले भावन आपने कर, अग्नि मांहि खिवायजी।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों धूप जु चरण आगे, जले अघके फंद हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम्० ।

श्रीफल बिदाम अनार खारक, और फल बहु लाइयो।
धर हुलस चितकर कायको शुभ आप कर ले आइयो।

ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों फल शुभ चरण आगे, मोक्षफलको कंद हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो फलं० ।

जल मलय अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फला सही।
कर अर्घ आठों दरब केरी, आपने करमें ठही।
ऋषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों अरघ सु चरण आगे, सबै सुखको कन्द हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यम्० ।

शुभ अरघ सुन्दर आठ द्रवकी, मेलि निज कर लाइये।
बहु हरष धर तन पुलक तो हों भक्ति जिनकी गाइये।
वृषभादि जिन महावीर पर्यंत, बीस चार जिनंद हैं।
यह जजों अरघ जु चरण आगे, हरै सब अघ वृन्द हैं।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यम्० ।

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

वृषभदेवके पूजों पाय, प्रापति वृषकी तातैं थाहि।
ऐसे जानि अरघ शुभ लेय, मन वच तन करि पूज करेय।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित वृषभ जिनाय अर्घ्यम् ।।१।।

अजित जिनंदतै जय नहिं लई, लिये करम तिन ने क्षय पई।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित अजित जिनाय अर्घ्यं ।।२।।

संभव स्वामी नामी देव, भविजनको करता गुण भेव।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय।।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित सम्भवनाथाय अर्घ्यं ।।३।।

अभिनन्दन अभिप्राय सुजान, निर्भय फल भव्यनको थाय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन वच तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित अभिनन्दननाथाय अर्घ्यं ॥४॥

सुमतिनाथ सुमती दातार, नाम धार उतरे भव पार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित सुमतिनाथाय अर्घ्यं ॥५॥

पदमनाथके पूजन हेत, आवत सुर नर हरष समेत।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित पद्मप्रभु जिनाय अर्घ्यं ॥६॥

भो सुपार्श्व पारस जिनदेव, सेवत भविजन सुखकरि लेय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित सुपार्श्वनाथाय अर्घ्यं ॥७॥

चन्द्रप्रभु बिच किरण मनोज्ञ, सुनतें भागें कर्म अजोग।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥८॥

पुष्पदंत सब ही सुखकार, धर्म सुगन्ध तनों दातार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥९॥

शीतलनाथ अधिक गुण रूप, शीतल ह्वै मार्‌यो अरि भूप।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥१०॥

श्रीश्रेयांस जिन निर्मलभाव, मोह अरि जीत्यो करि चाव।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित श्रेयांसनाथाय अर्घ्यं ॥१०॥

वासुपूज्य जग पूजक देव, वास सुरग शिव दे तुम सेव।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥१२॥

विमलदेव मल कर्म सु खोय, निर्मल भये ज्ञान शुध जोय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित विमलनाथाय अर्घ्यं ॥१३॥

अनंतनाथ जिन जगत उदार, किये अनंत जीव भव पार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित अनन्तनाथाय अर्घ्यं ॥१४॥

धर्मनाथ जिन धर्म जहाज, धारि घने भवि धर भव पाज।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।१५॥

शान्तिनाथ समता कर सोय, जीते अघ अरि तारो मोय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित शान्तिनाथाय अर्घ्यं ॥१६॥

कुंथुनाथ करुणाजुत देव, कुञ्जर कुंथु उबार करेव।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित अरनाथाय अर्घ्यं ॥१७॥

अर जिन कर्म अरी कर छेव, तुम तारक मेरे अघ भेव।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित अरनाथाय अर्घ्यं ॥१८॥

मल्लिदेव सम मल्ल न कोय, मोह जिसे मल्लन कुल खोय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित मल्लिनाथाय अर्घ्यं ॥१९॥

मुनिसुव्रत मन जानन हार, मनमथ भूपति कीने छार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित मुनिसुव्रत जिनाय अर्घ्यं ॥२०॥

नमीनाथ नमिहूँ पद तोय, करुणा करि मेरे अघ खोय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित नमीनाथाय अर्घ्यं ॥२१॥

नेमि जिनेश नमन सुखकार, नमिकर जीव भये भव पार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित नेमिनाथाय अर्घ्यं ॥२२॥

पारस देव पार्श्वगुण धार, जीव कुधात कनक करतार।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्यं ॥२३॥

महावीर सम वीर न कोय, तानै कर्म अरी कुल खोय।
यातै मैं जिन पूज कराय, मन-वच-तन करि अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं ॥२४॥

(अडिल्ल)

आदिनाथ जिन देव आदि महावीरलों, बीस चार जिन देव जयो अरि धीर लों।
सबही मंगलकारण सबको है सही, मन-वच-तन करि अर्घ जजों इन पद मही॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं ॥२५॥

जयमाला

(अडिल्ल)

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन जानिये, सुमति पदम जिन देव सुपारस मानिये।
चंदा जिन पुष्पदंत जानि शीतल सही, श्री श्रेयांस जिन वासुपूज्य शिवकी मही॥१॥

विमल अनंत धर्म शांति जिन जोइये, कुंथु अर मल्लि देव पूजि अघ खोइये।
मुनिसुव्रत नमि नेम पार्श्व महावीरजी, ये चौबीसों देव करो भव तीरजी॥२॥

ये ही सुख दातार सदा मंगल करें, ये ही पुण्य फल दाय सकल संकट हरें।
ये ही त्रिभुवन नाथ जगतके सुख करा, ये ही अधम उधार घनेका अघ हरा॥३॥

ऐसे देव निहार शरणमें आइया, पूजों पद जिन देव हरष बहू पाइया।
ता विध जग जश होय विरदकी ज्यों रहै, और न वांछा कोई तार भव भवि कहै॥४॥

तोसे दाता और नाहिं या भुवनमें, नाम लेत ते तिरै तीर्थ के गमनमें।
तारन तुम सब और न दीन दयालजी, मो सम पतित उधार विरद तुम पालजी॥५॥

(दोहा)

इत्यादिक मों मन विषै, वांछा पूरी देव।
सेव तुम्हे करि शिव लहै, मैं चाहूँ तुम सेव॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे कैलासगिरि स्थित ऋषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं।

कैलासगिरि स्थित आगामी काल चतुर्विंशति जिनपूजा

(अडिल्ल)

भरतक्षेत्रे कैलास ऊपर जानिये,
अनागत चौबीस जिनको थान बखानिये।
देव खगां तहां जाय पूज जिमि सुख लहै,
हम इहां भावन थापि पूजिके अघ दहै॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिन अत्रअवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निधौ, भव भव सन्निधिकरणम्।

(गीतिका)

लाय निरमल नीर सुखदा, क्षीर दधि सम जानिये।
कनक झारी हरष जुत ह्वै, आपने कर आनिये॥
कैलासगिरिके शीश जिनके थान जो सुखदाय है।
मैं जजों धारा देय जलकी, जरा जनम नशाइये॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं०

घसि नीर निरमल मांहि चन्दन, घ्राणको सुखदाय जी।
फिर कनक थाली आप कर ले, भक्ति बहु उर लायजी॥
कैलासगिरि शीश जिनके, थान जो सुखदाय है।
मैं जजों चन्दन पाय जिनके, फलै भव तप जाय है॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो चंदनं०

शुभ लेय अक्षत जान मुक्ता, फल समा उज्वल सही।
बिन खंड नख शिख शुद्ध जानो, गंध जुत तंदुल कही॥

मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै होई अखंड सुख फल फेर दुःख नहीं पायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतम्०

फूल सुर द्रुम गंध दायक वरण नाना जानिये।
तिस गंध वसि हो भ्रमर आवै, पहुप ऐसे आनिये॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै नाशै मदनको मद, सहज ही दुख जायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पं०

नैवेद्य षट् रस पूर वांछित, जीभको सुखदा सही।
ले तुरत कीनों आप कर ले, महा उज्वल शुभ मही॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै भूख विनाश पावै, दोष सब ही जायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यं०

दीप तमहर रतन कारी, घटपटा परकाशियो।
धर थाल कंचन आप कर ले, भक्ति बहु मुख भाषियो॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै मिथ्या रोग नाशै, ज्ञान प्रकटै आयजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं०

अगर आदि मिलाय दश विधि, धूप मन मानी धरों।
बिन धूम अगनि माहि धर करि, भाव निरमल निज करों॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै नाशै कर्म सबही, सिद्धको पद पायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपं०

लाय श्रीफल लोंग पिस्ता, सुभग पुंगी फल सही।
खारक विदाम सु आदि दे के, फल लिये बहु सुख मही॥

मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै उपजे मोक्षके फल, और क्या अधिकायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलं०

नीर चन्दन सुभग अक्षत, फूल चरु दीपक सही।
वर धूप दशधा फल मनोहर, मेलिके वसु अर्घ ही॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै अद्भुत होय महिमा, सिद्धको पद पायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यं०

जल आदि द्रव्य मिलाय आगे, अरघ सुखदा लायजी।
ले आपने कर आरती शुभ, जिन तने गुण गायजी॥
मैं जजों कैलास शीश जिन थल, पाय जिन मन लायजी।
ता फलै उपजे देव खग नर, फेर शिवथल पायजी॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ आगामी चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यं०

प्रत्येक अर्घाणि

(दोहा)

आवत चौबीसी विषै, पद्मनाभि जिन देव।
तिन पद मन वच काय शुभ, अरघ करों कर सेव॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी पद्मनाभि जिनाय अर्घ्यं ॥१॥

आवत चौबीसी विषै, होय प्रभु सुरदेव।
तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी सुरदेव जिनाय अर्घ्यं ॥२॥

आवत चौबीसी विषै, होवें सुप्रभ देव।
तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी सुप्रभ जिनाय अर्घ्यं ॥३॥

आवत चौबीसी विषै, होय स्वयं प्रभ देव।
तिन पद मन वच काय शुभ, अर्घ जजों कर सेव॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी सुप्रभ जिनाय अर्घ्यं ॥४॥

(चौपाई)

सरवातम जिनवरको नाम, पूजे मिटे पाप दुख ठाम।
आवत चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी सर्वात्म (सर्वायुध) जिनाय अर्घ्यम् ॥५॥

देवपुत्र जिनवरको नाम, तिन पूजे पावै सुख ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी देवपुत्र जिनाय अर्घ्यम् ॥६॥

कुलपुत्र जिनवरको नाम, ताहि जपै पावे सुख ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी कुलपुत्रदेव जिनाय अर्घ्यम् ॥७॥

नाम उदंक जिनेश्वर तनो, ता पूजै अघ सुख तें अनो।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी उदंकजिनाय अर्घ्यम् ॥८॥

प्रोष्टलनाम है जिन तनो, नाम लेत तिस निज अघ हनो।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी प्रोष्टल जिनाय अर्घ्यम् ॥९॥

जयकीरति जिनवरको नाम, तिन सेयां अति सुखको ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी जयकीर्ति जिनाय अर्घ्यम् ॥१०॥

पूर्णबुद्ध जिनजीको नाम, तिन सेवा अति सुखको ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि आगामी पूर्णबुद्ध जिनाय अर्घ्यम् ॥११॥

अरहनाथ जिनवरको सही, सेवातें पावै शिव मही।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्काल अरहनाथ जिनाय अर्घ्यम् ॥१२॥

निःपाप जिनजीको नाम, सेवातें टूटें अघ धाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य निःपाप जिनाय अर्घ्यम् ॥१३॥

निःकषाय जिनजीको नाम, दीनदयाल पाल गुण ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य निःकषाय जिनाय अर्घ्यम् ॥१४॥

विपुलनाम जिनवरको सही, सेवातें पावे शिव मही।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य विपुलमति जिनाय अर्घ्यम् ॥१५॥

निरमलनाथ जिनेश्वर तनों, सेवातें जानै अघ हनो।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य निरमल जिनाय अर्घ्यम् ॥१६॥

चित्रगुप्त प्रभुजीको नाम, सेवो भवि पावो शिव ठाम।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य चित्रगुप्त जिनाय अर्घ्यम् ॥१७॥

गुप्त समाधि जिनेश्वर सही, तिनको ध्यावो भवि शुध मही।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य समाधि गुप्त जिनाय अर्घ्यम् ॥१८॥

नाम स्वयंप्रभ देव जिनेश, मूरति शान्ति महा शुभ भेष।
आगम चौबीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य स्वयंप्रभ जिनाय अर्घ्यम् ॥१९॥

अनिवृत्त जिनजीको नाम, सेवत होय ज्ञान उर ठाम।
आवत चौवीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य अनिवृत्त जिनाय अर्घ्यम् ॥२०॥

जयनामा भगवनको नाम, ध्यावो भवि पावो सुख धाम।
आवत चौवीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य जयनाम जिनाय अर्घ्यम् ॥२१॥

नाम विमल जिन सहित तनों, ध्याये होय ज्ञान उर घनो।
आवत चौवीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य विमलनाम जिनाय अर्घ्यम् ॥२२॥

देवपाल त्रिभुवन भगवान, पावैगे सुध केवलज्ञान।
आवत चौवीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य देवपाल जिनाय अर्घ्यम् ॥२३॥

नाम अनन्त वीर्य भगवान, ध्याये भवि पावे शुभ ज्ञान।
आवत चौवीसीमें होय, तिनके पद पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं कैलासगिरि सम्बन्धि भविष्यत्कालस्य अनन्तवीर्य जिनाय अर्घ्यम् ॥२४॥

(अडिल्ल)

पद्मनाम जिन आदि और जिन जानिये, अनन्तवीर्य पर्यन्त महा सुख थानिये।
बीस चार जिन देव होहिंगे अब सही, ते पूजों वसु द्रव्य थकी फल सुखमही॥

ॐ ह्रीं आगामी पद्मनाभ आदि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घ्यं ॥२५॥

जयमाला

(तोटक छन्द)

पहिले षट मास रहे जब ही, तब इन्द्र सु प्रथम विचार सही।
छह मास सु आयु रही जिनकी, तुम धनपति जाय करो विधकी॥

तब आय कुबेर जु नग्रि रची, कनका रतनामय सोभ सची।
वरषा नृप आंगण में नितही, अध तीन करोड़ सु रत्न लहीं।।

तिहिं देखत जीव मिथ्यात गये, जिन महिमातैं सम्यक्त ठ्ये।
पुनि आइय गर्भ जिसी दिनजी, तब मात सु स्वप्न लई इमजी।।

मृगराज वृषभ गजराज लख्यो, जुगमीन सरोवर सिंधु अख्यो।
जुगमाल सु कुंभ हरी कमला, शशि सूर्य धनंजय निर्धुमिला।।

हरिपीठ भवन धरणेन्द्र कही, सुरराज विमान ए सोल कही।
उठ मात सु प्रातक्रिया करिकैं, पतिपैं विरतंत कह्यो निशिके।।

तब अवधि सुज्ञान विचार कहै, तुव गर्भ जिनेश्वर आन लहै।
सुन दंपति मोदभरी अति ही, फुनि आसन कंप भई चव ही।।

तब आय सु सप्त समाज लिये, जिन मात रु तात सनान किये।
पुनि पूजि जिनंद सु ध्यान करी, निज पुण्य उपाय गये सुधरी।।

सुर देव सु सेव करे नितही, जिन मात रमावनकी चित ही।
केई ताल मृदंग सु बीन लिए, मुरचंग अनेक सु नृत्य किए।।

इम षष्ट पचास कुमारी करैं, अपने अपने कृत चित्त धरैं।
इन आदि अनेक नियोग भई, कहि कौन सके मैं मंद धिई।।

तुमरो इक नाम अधार हिये, अनुरै सब जाल वृथा गनिये।
तिसतै अब नाथ कृपा करिये, भव संकट काट सुधा भरिये।।

ॐ ह्रीं आगामी पद्मनाभ आदि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा ।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जंबूद्वीपके भरतमें पावन गिरि कैलास,
बाहुबलीने पा लिया प्रथम जहां शिववास।
ऋषभनाथ अरु भरतका भी है मुक्ति धाम,
इस पावन सिद्धक्षेत्रको नित नित करुं प्रणाम।
ये तीनों चौबीसिका, सकल सुखनिको मूल;
कहूं तास जयमालिका, नाम प्रथम युत थूल।१।

(चौपाई)

तामें प्रथम भूत चौबीस, नाम जपौं भ्रमहरन रवीस,
निर्वाण रु सागर महासाध, विमल विमलप्रभ शुद्ध अराध।२।
श्रीधर दत्त नाथ विमलेश, उधरन अगनिनाथ शुभ भेश,
संजम पुष्पांजलि शिवगणा, उत्साह रु ज्ञानेश्वर देव।३।
परमेश्वर विमलेश्वर सार, और यथारथ जसोधर सार,
कृष्ण ज्ञानमति विशुद्ध मतीय, भद्र रु शांत युक्त शिव पीय।४।
ये चौबीस अतीत जिनेश, बंदौं दायक पद परमेश,
आगे वर्तमान जिन ईश, नाम जपौं पद कर जगदीश।५।
ऋषभ अजित संभव सुख बीज, अभिनंदन सुमत भव ईश;
पद्म प्रभु रु सुपारसनाथ, चंद्रप्रभु चंद्र सम गात।६।
पुष्पदंत शीतल तपहार, श्रेय रु वासपूजि सुखकार;
विमल अनंत धर्म जिनराज, शांति कुंथ दायक सुख साज।७।
अरि मलि मुनिसुव्रत जगनाथ, नमि अरु नेमनाथ सुख साथ;
पार्श्व रु वीराधिप महावीर, कर्म चूरि पहुंचे भवतीर।८।
ये चौवीस कही वरतमान, भव तारन जगगुरु भगवान;
आगे कहूं अनागत जिना, चतुर्विंश संख्या तिन भना।९।
महापद्म पुनि सुर सुदेव, सुप्रभ स्वयंप्रभु गहि सेव;
सर्वायुध जगदेव जिनेश, उदयदेव उदयंक सुभेश।१०।

प्रश्नकीर्ति जयकीर्ति उदार, पूर्ण बुद्ध निकषाय जु सार;
विमल प्रभु जिन बहल सु भले, चित्र समाधिगुप्त निर्मले।११।
स्वयंभूव कंदर्प जिनेश, जयनाथ जिन विमल भ्रमेश;
दिव्यवाद जिन अनंत सुवीर, अनंतवीर्य चौवीस समधीर।१२।
ये चौवीस अनागत जिना, भव उधरन कारण शिव सना;
भूत वर्त भविषित चौवीस, कीनी थुति भवहरन जगीश।१३।
तिन सबके बहत्तर जिनराज, बंदो भवदधि तरन जहाज,
त्रय चौवीसनिके परसाद, गिरि कैलास विषै सुख साध।१४।
निर्मापित भरत चक्रीश, पूजैं तासु शक्र चक्रीश,
ये ही कर्मनाशके कार, ये ही शिवरमणी भरतार।१५।
ये ही परम पूज परमेश, ये ही सकल सुखनिके वेश;
ये ही मो मनवांछितकार, या भव परभव अर्थ उदार।१६।
ये ही जनम जरा मृतु हरैं, ये ही परम थानकों करैं,
जाकै शरण और नहि कोय, ताके शरण सु ये हैं जोय।१७।
कोई होय करण ते संघ, ये बिन कारण सब जगबंध,
ये जिन बहत्तरकी गुणमाल, जे पहरैं निज कंठ विशाल।१८।
ते भव भव जग विभव अनेक, लाभैं परभव होय शिवेश,
पूजूं ताकौं अर्घ सु देय, मन वच तन बहु भक्ति सुलेय।१९।

(दोहा)

ये चौबीसी तिनके बहत्तर जिनपद धाम,
भरतचक्री निर्मित किये प्रथम गिरि कैलास;
उन पावन जिनधामको पूजन करुं मन लाय,
पाउं पद निर्वाणको मम अंतर अभिलाष॥

ॐ ह्रीं श्री जंबूद्वीप भरतक्षेत्रे कैलासगिरि सिद्धक्षेत्र स्थित भूत-वर्तमान-भावि त्रण चौवीसी जिनेन्द्रेभ्यः महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिनपूजा

(दोहा)

दायक यश जग सुमति सुग, सुख दुतिरूप अपार,
घायक विधि घायकनिके लायक जग उद्धार।
सीमंधर आदिक सकल, वियद बाहु मित ऐन,
आह्वानन त्रिविधा करूं, इत तिष्ठहुं सुख दैन।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः ! अत्र अवतर अवतर, संवोषट्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमान विंशति जिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्।

(रुचिरा छंद)

शीतल सलिल अमल तृषहारक, लेय सुधासम भृंगभरं,
जिनपति चरन अग्र त्रय धारा, धरूं ताप त्रय नाशकरं,
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो जलं०

मलय पटीर घसित वरकुंकुम, शीतल गंध सुरंग भयो,
सारस वरन चरन तव धारत, आकुल दाह अपार हर्यो। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो चंदनं०

जीरक श्याम सुगंधित तंदुल, श्वेत वरन वर अनियारे,
लहि अक्षत अक्षतपद पावन, धरूं पुंज दृढ मनहारे। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो अक्षतं०

केतकि कंज गुलाब जुही वर, सुमन सुवासित मनहारी,
धारत चरन लहें समतासर, नशें मदनसर दुखकारी।
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो पुष्पं०

विंजन विविध छहों रस पूरित, सद्य सुसुंदर बलकारी,
श्रीपति चरन चढाऊं चरु वर, निज बलदायक क्षुतहारी। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो नैवेद्यं०

प्रजलित ज्योति कपूर मनोहर, अथवा पूरित स्नेह वरं,
करत आरती हरि भव आरति, निज गुन जोति प्रकाशकरं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो दीपं०

चूरित अगर पटीरादिक वर, गंध हुताशन संग धरूं,
खेऊं धूप जगेशचरन ढिग, चाहत हूं विधि नाश करूं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो धूपं०

फल दाडम एला पिकवल्लभ, खारिक आदिक मिष्ट भले,
लेकर चरन चढावत जिनके, पावत हूं फल मोक्ष रले। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो फलं०

जल चंदन अक्षत मनसिजशर, चरु दीपक वर धूप फलं,
भवगदनाशन श्रीपतिके पद, वारत हूं करि अर्घ भलं। जय०

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेनद्रेभ्यो अर्घं०

जयमाला

द्वीप अर्ध द्वय मेरु पन, मेरु मेरु प्रति चार,
विहरत विभव अनंत युत, अवनि विदेह मझार।

(चंडी छंद : मात्रा १६)

सीमंधर सुखसीम सुहाये, युगमंधर युग वृष प्रकटाये,
बाहुबाहुबल मोह विदार्यो, जिन सुबाहु मनमथ मद मार्यो ॥१॥

संजातक निज जाति पिछानी, स्वयंप्रभु प्रभुता निज ठानी,
ऋषभानन ऋषिधर्म प्रकाशन, वीर्य अनंत कर्मरिपु नाशन ॥२॥

सूरप्रभु निजभा परिपूरन, प्रभु विशाल त्रिकशल्य विचूरन,
देव वज्रधर भ्रमगिरि भंजन, चंद्रानन जगजन मनरंजन ॥३॥

चंद्रबाहु भवताप निवारी, ईश भुजंगम-धुनि-मन धारि,
इश्वर शिवगवरी दुःखभंजन, नेमिप्रभु वृषनेमि निरंजन ॥४॥

वीरसेन विधि अरि-जय वीरं, महाभद्र नाशक भव-पीरं,
देव देवयश को यश गावै, अजितवीर्य शिवरमनि सुहावै ॥५॥

ये अनादि विधि बंधनमांही, लब्धियोग निज निधि लखि पाई,
सम्यक् बलकरि अरि चकचूरन, क्रमतें भयें परम हुति पूरन ॥६॥

अंतरीक आसन पर सोहै, परम विभूति प्रकाशित जोहै,
चौसठ चमर छत्रत्रय राजै, कोटि दिवाकर दुति लखि लाजै ॥७॥

जय दुंदुभि धुनि होय सुहानि, दिव्यध्वनि जग जन दुखहानि,
तरु अशोक जनशोक नशावै, भामंडल भव सात दिखावै ॥८॥

हर्षित सुमन सुमन वरसावै, सुमन अंगना सुगुन सुगावै,
नव रस-पूरन चतुरंग भीनी, लेत भक्तिवश तान नवीनी ॥९॥

बजत तार तननननननननन घूघरु घमक झुननन झुननन,
घीं धीं घृकट द्रमद्रमद्रम, ध्वनत मुरज पुरु ताल तरलसम ॥१०॥

ता थेईथेईथेई चरन चलावै, कटिकर मौरि भाव दरसावै,
मानथंभ मानीमद खंडन, जिन-प्रतिमा-युत पापविहंडन ॥११॥

शालचतुक गोपुर-युत सोहै, सजल खातिका जनमन मोहै,
द्विजगन कोक मयूर मरालं, शुक-कलरव रव होत रसालं ॥१२॥

पूरित सुमन सुमनकी बारी, वन–बंगला गिरवर छबिधारी,
तूर ध्वजा गेन पंक्ति विराजे, तोरन नवनिधि द्वार सु छाजै॥१३॥

इत्यादिक रचना बहु तेरी, द्वादश सभा लसत चहुं फेरी,
गनधर कहत पार नहि पावै, ''थान'' निहारत ही बनि आवै॥१४॥

श्रीप्रभुके इच्छा न लगारं, भविजन भाग्य उदय सु विहारं,
ये रचना मैं प्रगट लखाऊं, या हित हरषि हरषि गुन गाऊं॥१५॥

(छंद : घत्ता)

यह जिन गुनसारं, करत उचारं, हरत विकारं, अघभारं,
जय यश दातारं, बुधि–विस्तारं करत अपारं सुखसारं।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विंशति-जिनेनद्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद : अडिल्ल)

जो भविजन जिन विंश यजैं शुभ भावसु,
करै, सुगुनगनगान भक्ति धरि चावसूं;
लहै सकल संपत्ति अर वर मति विस्तरै,
सुर नर पद वर पाय मुक्ति रमनी वरै।

॥ इति आशीर्वादः ॥

इति श्री सीमंधरादिक विंशति विद्यमान जिनपूजा समाप्त।

श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा

(जोगीरासा)

धातकी खंड विदेहधाम बहु आनंदमंगळकारी,
ज्यां वर्षे तीर्थंकर प्रभुनो ध्वनि शाश्वत सुखकारी;
तत्र बिराजे त्रिभुवन तारक भाविना भगवंता,
अहो! पधार्या भरतभूमिमां करुणामूर्ति जिणंदा।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम् !

(राग : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

क्षीरोदधिथी भरी नीर, कंचन कळश भरी,
प्रभु तव पद पूजुं जाय आवागमन टळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन साथ केसर घसी लाउं,
मम भव आताप नशाव, प्रभु तुज पाय पडुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रक्षालित अक्षत शुद्ध, कंचन थाल भरुं,
अक्षय पद प्राप्ति काज प्रभु पद पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

जासुद, चंपा, सुगुलाब, सुरभि थाळ भरुं,
मम कामबाण कर नाश, प्रभु तुज चरण धरुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी खाजा पकवान, मोदक भरी लावुं,
मम क्षुधारोग निरवार, प्रभु सन्मुख जाउं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजु मणिदीप हजूर, आतमज्योति जगे,
कर मोह तिमिरने दूर, भवनो भय भागे;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लई अगर तगर कर्पूर दश विधि धूप करी,
प्रभु सन्मुख खेउं जाय कर्म कलंक बळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफळ सोपारी,
मागुं शिवफळ तत्काळ, प्रभुपद बलिहारी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जिनेश्वर बसो हृदयके माँहि...)

भावि तीरथनाथकी जी महिमा अतुल महान,
सुर-नर-मुनि जिनके सदा जी, प्रणमें निशदिन पाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

द्वीप धातकी खंडमें जी, विदेहधाम सुख खान,
विचरे तीर्थंकर प्रभु जी, करते भवि कल्याण,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य दिवस घडी धन्य है जी, धन्य धन्य अवतार,
भावि जिनवर चरणमें जी, लाग्यो चित्त बडभाग,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य युगल पद होय तब जी, मैं पहुंचुं तुम पास,
धन्य हृदय हो ध्यानतें जी, ध्याऊं निज हित काज,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

दरश करत तव चरणके जी, चक्षु धन्य तब थाय,
सफल करणयुग होत तब जी, वचन सुने जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

पूज करूं तव चरणकी जी, करयुग धनि तब थाय,
शीस धन्य तब ही हुये जी, नमत चरण जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

मैं दुखिया संसारमें जी, तुम करुणानिधि देव,
हरे दुख यह मो तणो जी, करी हों तुम पद सेव,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

स्वरूप तिहारो हृदय विषे जी, धारूं मन वच काय,
भवसागरको भय मिट्यो जी, यातें त्रिभुवन राय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

भावि जिनवर चरणकी जी, भरी भक्ति उर मांहि,
निजस्वरूपमय कीजिये जी, भव संतति-मिट जाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपमीति स्वाहा।

श्री विष्णुकुमार महामुनिपूजा

(श्रावण सुद पूर्णिमाके दिन करनेकी पूजा)

(अडिल्ल)

विष्णुकुमार महामुनिको ऋद्धी भई,
नाम विक्रिया तास सकल आनंद ठई;
श्री मुनि आये हस्थनापुर के बीचमें,
मुनि बचाये रक्षा कर वन बीचमें।
तहां भयो आनंद सर्व जीवनको घनो,
जिमि चिंतामणि रत्न रंक पायो मनो;
सब पुर जयकार शब्द उचरत भये,
मुनिको देय अहार हरष करते भये।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनै ! अत्र अवतर संवौषट्,–अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः–अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणं।

(दरशविशुद्धि भावना भाय–राग)

गंगाजल सम उज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर,
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय;
सप्त सैकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान,
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन लै सार, पूजों श्री गुरुवर निधिधार;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेत अखंडित अक्षय लाय, पूजों श्री मुनिवरके पाय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमहामुनिभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी पुष्प चढाय, मेटो कामबाण दुखदाय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय।
सप्त सैकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान,
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू फैनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरन चढाय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर का दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावै खोय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुधूप बनाय, जारै अष्ट करम दुखदाय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोंग इलायची श्रीफलसार, पूजौं श्री मुनि सुख दातार;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों दरव संजोय, श्री मुनिवर पद पूजौं दोय;
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सावन सुदी सु पूर्णिमा, मुनिरक्षा दिन जान;
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान।

(भुजंगप्रयात)

श्री विष्णु देवा करूं चर्णसेवा, हरो जगकी बाधा सुनो टेर देवा;
गजपुर पधारे महासुखकारी, धरो रूप वामन सु मनमें विचारी।
गये पास बलिके हुआ वो प्रसन्ना, जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना,
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै, दयी तीन ततक्षिण सु नहि ढील थापै।
करी विक्रिया मुनि सु काया बनाई, जगह सारी लेली सु डग दोके मांही,
धरी तीसरी डग बली पीठ मांही, सु मांगी क्षमा तब बलिने बनाई।
जलकी सुवृष्टि करी सुखकारी, सर्व अग्नि क्षणमें भई भस्म सारी;
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से, भई जय जयकार सर्व नग्र ही से।

(चौपाई)

फिर राजके हुकम प्रमाण, रक्षाबंधन बंधी सुजान;
मुनिवर घर घर किये विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार।
जा घर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सु लोय;
स्थापन कर सो दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार।
तबसे नाम सलूनो सार, जैनधर्मका है त्यौहार;
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म बढे सु अतीव।
धर्म पदारथ जगमें सार, धर्म विना झूठो संसार;
सावन सुदी जब पूनम होय, यह दो पूजा कीजो लोय।
सब भाईयन को दो समझाय, रक्षाबंधन कथा सुनाय;
मुनिका निजघर करो अहार, मुनि समान तिन देवो अहार।
सबके रक्षा बंधन बांध, जैन मुनिकी रक्षा साध;
इस विधिसे मानों त्योहार, नाम सलूनो है संसार।

(धत्ता)

मुनि दीनदयाला, सब दुःख टाला, आनंदमाला, सुखकारी;
रघुसुत नित वंदे, आनंद कंदै, सुकखकरवास दे हितकारी।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमहामुनिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विष्णुकुमार मुनि चरणको, जो पूजै धर प्रीत;
रघुसुत पावे स्वर्गपद, पुण्य बढे नवनीत।

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

स्वानुभूति-तीर्थ सुवर्णपुरी पूजा

(राग–सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
तू परमातमा है, ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी॥

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्रावतर अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भव भव, इति सन्निधिकरणम्।

उज्ज्वल जल शितल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहान-गुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,

अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वानुभूतितीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिन-बिंबेभ्यो दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है॥

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा॥

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं॥

विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं॥

परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें॥

पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं॥

स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया॥

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु–वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली॥

प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे॥

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है॥

जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धर–स्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरुनन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री

आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावि तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावि श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्–जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार—इत्यादि सर्व वीतरागपदेभ्यः पूजनार्थे महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधर अर्घ

(राग–दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

❀

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों।
अर्हन्त–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा;
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं;

पंच मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेहके;
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु; देव-शास्त्र-गुरु; उत्तमक्षमादि दशधर्म; दर्शनविशुद्धिआदि षोडशभावना; त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिम-अकृत्रिम समस्त चैत्य-चैत्यालय; पंचमेरु-संबंधि-चैत्य-चैत्यालय; नंदीश्वर-संबंधि-जिन-जिनालय; श्री कैलास-सम्मेदगिरि-गिरनारगिरि-चंपापुरी-पावापुरी आदि निर्वाणक्षेत्र; शत्रुंजय-गजपंथा आदि सिद्धक्षेत्र, अध्यात्म-साधनातीर्थ सुवर्णपुरी, श्रवणबेलगोला आदि अतिशयक्षेत्र; श्री ऋषभआदि चतुर्विंशति जिनेन्द्रदेव; श्री सीमंधर आदि विंशति जिनेन्द्रदेव; इत्यादि त्रिलोकवर्ती-त्रिकालवर्ती समस्त-पूज्यपदेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

शान्तिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्तिकरा जिनेन्द्रा;
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपा;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम्

(पुष्पांजलिं)

❀

कैलास तीर्थनी आरती

(धन्य धन्य आज घडी--राग)

आरति उतारुं हुं तो आदिनाथदेवनी,
आदिनाथ दरबार देखा आदिनाथ दरबार है.

कैलाश पर्वतथी आदिनाथ प्रभुजी, मुक्ति पधारे मंगल तीर्थधाम छे (२)
भरतभूमिना आदि भगवान छे....आदिनाथ....

बोंतेर जिनवरना बिंब मनोहार छे, भरतराजे मणिरत्नना बनावीया (२)
मंगल आरती त्रय चोवीसीनी....आदिनाथ....

तीर्थवंदना श्री गुरुदेव साथे, अद्‌भुत मंगल आश्चर्यकार छे (२)
आरती उतारीए भक्तिवंदन करीए...आदिनाथ...

❀

बाहुबली आरती

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०

बार बार मास तपस्या करंता, उभा जंगलमांही,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०

भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीए श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०

महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०

❀

तीन चौबीस जिन आरती

(राग–आवो रे सहु भक्तो...)

चौवीस दीपकोंना थाल सजावो रे,
तीन चौवीसी जिन आरती उतारो रे...चोवीस...

भूत-वर्त-भावि जिन सुवर्णे पधार्या,
भक्तजनो सहु आरती उतारे,
मंगलगीतोथी जिनालय गजावो रे...चोवीस...

अतीतकालना चोवीस जिनवर,
वंदु स्तुति पूजन मंडल रचावुं रे,
आगत चोवीस जिनजी पधार्या रे...चोवीस...

ऋषभ, अजीत, संभव, अभिनंदन,
सुमति, पद्म, सुपास, चंद्र जिनवर,
पुष्पदंत, शीतल श्रेयांस रे...चोवीस...

वासुपूज्य, विमल अनंत जिनराज,
धर्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लिनाथ,
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि पार्श्व रे...चोवीस...
महावीर प्रभुजीनी आरती उतारो रे...चोवीस...

बोंतेर जिनवर मंगल पधार्या,
कहानगुरुना पुनित प्रतापे,
भगवती मातना मंगल प्रभावे,
भावभक्ति सह पूज रचावो रे...चोवीस...

❑

कैलास तीर्थनी आरती

कैलाश सिद्धधाम, प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

कैलाशगिरिथी मुक्ति पधार्या, समश्रेणीए सिद्ध बिराज्या,
प्रगट्या पूर्ण निधान...प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

भूतकाळना चोवीस जिनवर, वर्तमान चोवीसी बिराजे,
भावि चोवीस नाथ....प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

चैतन्यमंदिरे नित्य विचरतां, अनुपम आनंदे जिन विहरतां,
बोंतेर बोंतेर भगवान...प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

त्रिभुवन-तारणहार पधार्या, सुरनरमुनिना नाथ बिराज्या,
भारत भाग्यवान...प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

कहानगुरुना दिव्यप्रतापे, भगवती मातना मंगल प्रतापे,
पधार्या श्री भगवान...प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

आरती उतारीए, वंदना करीए, श्री जिनवरनी पूजा करीए,
बोंतेर बोंतेर घंटनाद...प्रभुजीने लाखों प्रणाम;
आरती करीए वारंवार.

❑

ॐ जय जिनवरदेवा (आरती)

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ
दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि-सिद्धि-सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार...ॐ
आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडघातकी-महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ
पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक-तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ ! आतमना आधार!.....ॐ
कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

❀

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम्;
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः,
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवन् जिनेन्द्रः॥६॥

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥७॥

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा॥८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ॥

(अथेष्ट प्रार्थना–मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः॥९॥

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः॥१०॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु॥११॥

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण॥१२॥

(प्रार्थना–आर्या)

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर परमानन्दैककारणं कुरुष्व;
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः॥१३॥

निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या;
अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने॥१४॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा;
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि॥१५॥

त्व कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं;
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे॥१६॥

ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि;
जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिःग्रहते॥१७॥

अपहर मम जन्म दयां, कृत्वा चेत्येकवचसि वक्तव्यं;
तेनातिदग्ध इति मे देव! बभूव प्रलापित्वं॥१८॥

तव जिन चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्;
संसारतापतप्त करेमि हृदि तावदेव सुखी॥१९॥

जगदेकशरणभगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौध;
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने॥२०॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥३॥

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्॥४॥

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्॥५॥

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत,
ते ज्ञानीना चरणमां, हो वंदन अगणीत।
एह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथ रूप जो;
तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाए थाशु ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिए)